B.A. I (Hons) | दर्शनशास्त्र

I Paper

वैशेषिक दर्शन - सात पदार्थ (गुण)

वैशेषिक दर्शन पर विहंगम दृष्टि डालने से पता लगता है कि वैशेषिक दर्शन में पदार्थों की मीमांसा हुई है। पदार्थ शब्द दो शब्दों के मेल से बना है, वे दो शब्द हैं 'पद' और 'अर्थ'। पदार्थ का अर्थ है जिसका नामकरण हो सके। जिस पद का कुछ अर्थ होता है, उसे पदार्थ की संज्ञा दी जाती है। पदार्थ के अन्दर वैशेषिक ने विश्व की वास्तविक वस्तुओं की चर्चा की है।

वैशेषिक दर्शन में पदार्थ का विभाजन दो वर्गों में हुआ है (1) भाव पदार्थ (2) अभाव पदार्थ। भाव पदार्थ छः हैं। – (1) द्रव्य, गुण (3) कर्म (4) सामान्य (5) विशेष (6) समवाय। सातवां पदार्थ अभाव को माना गया है। इस तरह वैशेषिक दर्शन में सात पदार्थों की संख्या स्वीकार किया है।

(2) गुण – गुण वैशेषिक दर्शन का दूसरा पदार्थ है। गुण द्रव्य में निवास करता है। गुण कभी भी अकेला नहीं पाया जाता है। जैसे सफेदी चूने में मौजूद रहती है। उससे पृथक उसका अस्तित्व नहीं है। द्रव्य का गुण होता है किन्तु गुण का गुण नहीं पाया जाता है। गुण कर्म से भी भिन्न है। गुण निष्क्रिय है जबकि कर्म सक्रिय।

कणाद के अनुसार गुण वह है जो द्रव्य में समवेत हो। गुण संयोग-विभाग का स्वतंत्र कारण नहीं होता, बल्कि [illegible] संयोग एवं विभाग का असमवायी कारण होता है। गुण स्वतंत्र न होकर द्रव्य पर आश्रित है।

कणाद ने गुणों की संख्या सत्रह बताई है जो इस प्रकार है। रूप, रस, गंध, स्पर्श, संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष एवं प्रयत्न। प्रशस्तपाद ने उपर्युक्त गुणों में सात और गुण जोड़ दिये हैं। जो इस प्रकार है गुरुत्व, द्रवत्व, स्नेह, संस्कार, धर्म, अधर्म एवं शब्द। इस प्रकार गुणों की संख्या चौबीस हो जाती है।

अब हम सभी का विवेचन अलग-अलग करेंगे। (1) रूप एक विशेष गुण है जिसका प्रत्यक्ष सिर्फ चक्षु से होता है इसका निवास स्थान जल, पृथ्वी एवं अग्नि में रहता है।

(2) रस- रस एक विशेष गुण है। जिसका प्रत्यक्षीकरण जीभ के द्वारा होता है।

(3) स्पर्श एक विशेष गुण है इसके प्रत्यक्षीकरण का आधार त्वचा है।

4) गंध - गंध एक विशेष गुण है इसके प्रत्यक्ष का आधार नाक है। सुगंध और दुर्गंध

5) संख्या सामान्य गुण के अन्तर्गत आता है। इसके कारण एक, दो, तीन जैसे शब्दों का व्यवहार होता है।

6) परिमाण-नापने के व्यवहार का असाधारण

कारण है इसकी उपस्थिति सभी द्रव्य में मानी गई है

(7) पृथक्त्व- द्वारा वस्तुओं की विभिन्नता का ज्ञान होता है यह सभी द्रव्य में पाया जाता है।

(8) संयोग- अलग अलग वस्तुओं को आपस में संयुक्त करता है किन्तु निवास सभी द्रव्य में है।

(9) विभाग आपस में मिले हुए द्रव्यों को पृथक करता है

(10) दूरत्व और अपरत्व दूर और निकट प्रत्यय का आधार है इनमें से प्रत्येक दो प्रकार के होते हैं: कालिक और दैशिक

(11) स्नेह के कारण चूर्ण वस्तु में पिंडी भाव पाया जाता है जिसका आधार होता केवल जल है।

(12) शब्द को श्रवणेन्द्रिय द्वारा ग्रहण किया जाता है यह आकाश का विशेष गुण है

(13) बुद्धि शब्द आदि के व्यवहार का प्रमुख कारण है वस्तुओं को जानना बुद्धि अर्थात ज्ञान कहलाती है

(14) सुख- दुःख वे सी वेदना जो सभी को अनुकूल

(15) जान पड़े सुख है और जो वेदना/अनुकूल जान पड़े वह दुःख है

(16) इच्छा किसी प्रति अनुराग को कहा जाता है

(17) जिसके द्वारा आत्मा में विरक्ति अथवा जलन का भाव उत्पन्न हो द्वेष कहते हैं।

(18) प्रयत्न आत्मा की चेष्टा है कार्य का पारिश्रमिक गुण प्रयत्न कहलाता है।

(19) धर्म-अधर्म सुख एवं दुःख विशेष कारण है जिसके द्वारा कर्ता को सुख एवं मोक्ष प्राप्ति हेतु धर्म एवं जिसके द्वारा कर्ता को दुःख मिले उसे

[illegible] करते हैं।

3) संस्कार – यह तीन प्रकार का होता है वेग, भावना, स्थितिस्थापक। वेग गति [illegible]

4) संस्कार संयोग – विभाग शील वस्तुओं का गुण है इसका निवास स्थान पृथ्वी, जल, वायु और मन है।

औपाधिक गुणों की व्याख्या में वे ही गुण आते हैं जो निरपेक्ष तथा मौलिक हैं अतः गुणों को औपाधिक मानना एक निश्चित दृष्टिकोण को प्रमाणित करता है।